JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

छत्तीसगढ़ राज्य के जांजगीर–चाम्पा जिले में कोविड–19 महामारी के दौरान महिला बुनकरों की स्थिति का अध्ययन

श्री मति मंजुला देवांगन

सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग, शासकीय नवीन महाविद्यालय सारागांव, जिला– जांजगीर–चाम्पा(छ.ग.)

सारांश

इस पत्र का उद्देश्य छत्तीसगढ़ राज्य के जांजगीर–चाम्पा जिले में कोविड–19 महामारी के दौरान महिला बुनकरों की भागीदारी और उनके सामाजिक आर्थिक जीवन पर प्रभाव का परिसीमन करना है, कोविड –19 महामारी काल में महिला बुनकरों की स्थिति बहुत खराब और दयनीय थी। हाथकरघा बुनाई उद्योग छत्तीसगढ़ राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का एक कालातीत पहलू है, भारत के छत्तीसगढ़ राज्य के जांजगीर–चाम्पा जिले में बुनकरों का उच्चतम अनुपात देखा जा सकता है और उनमें से लगभग 99 प्रतिशत महिलाएं हैं । हम देख सकते हैं जांजगीर–चाम्पा जिले के लगभग हर छत्तीसगढ़िया परिवार में कम से कम एक बुनने वाली या बुनाई से सम्बंधित कार्य करने वाली महिला अवश्य होती है। हाथकरघा के लिए छत्तीसगढ़ का प्रसिद्ध एवं विशिष्ट क्षेत्र जांजगीर–चाम्पा है । कोविड –19 स्थितियों के दौरान यह उद्योग बुरी तरह प्रभावित हुआ है, विश्लेषण से स्पष्ट रूप से पता चलता है कि बुनाई में महिलाओं की भागीदारी के साथ आय और आजीविका सकारात्मक रूप से सहसंबद्ध हैं। अर्थात महामारी के दौरान महिला बुनकरों की आय और आजीविका में गिरावट दर्ज किया गया हैं ।

शब्द संकेत – हाथकरघा उद्योग, महिला बुनकर, सहसम्बन्ध

परिचय

हाथकरघा उद्योग छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । यह हमारी छत्तीसगढ़ी संस्कृति का हिस्सा है, और कृषि के बाद सबसे बड़ी आर्थिक गतिविधियों में से एक है साथ ही अधिक संख्या में जनशक्ति को अवशोषित करता है। छत्तीसगढ़ राज्य एक मात्र ऐसा राज्य है जो रेशम की सभी पांच किस्मों अर्थात मुबेरी, मुगा, एरी ट्रॉपिकल टसर और शीतोष्ण का उत्पादन करता है, छत्तीसगढ़ अपने कुटीर उद्योग विशेष रूप से कताई और बुनाई के लिए प्रसिद्ध रहा है अतः हर छत्तीसगढ़िया घराने का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया, यह शोध पत्र जांजगीर– चाम्पा जिले की महिलाओं की हाथकरघा बुनाई की सामाजिक–आर्थिक स्थिति और कोविड–19 का उन पर प्रभाव पर केंद्रित है।

हाथकरघा उद्योग उस समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा का प्रतीक है, जो ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विविधता रखता है और जांजगीर–चाम्पा जिले को छत्तीसगढ़ राज्य के बाकी जिलो से एक अलग पहचान दिलाता है । यह समाज का आर्थिक ताना–बाना तथा समाज के भीतर एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, हाथकरघा उद्योग के लाभों में से एक यह है की यह अधिक श्रम गहन और कम पूंजी निवेश वाला व्यवसाय है । यह मानवीय इतिहास में जितना पुराना है और हो रहा है कला कौशल को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित करके बनाए रखा हुआ है । हाथकरघा बुनाई क्षेत्र 43 लाख से अधिक बुनकरों और श्रमिक संबद्धों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्रदान करता है ।

बुनकरों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति इतनी दयनीय है कि यह इनकी बुनियादी मानवीय जरूरतें को भी पूरा नहीं कर पाते हैं । हाथकरघा उद्योग में मजदूरी की व्यवस्था बहुत विविध है । इस क्षेत्र में औरते, पुरुषों के बराबर कार्य करती हैं लेकिन औरतो को पुरुषो से कम मजदूरी मिलती है, जिससे उनका आर्थिक शोषण होता है इसलिए रेशम उत्पादन शिक्षा में कम कुशल गतिविधियों को अवर्गीकृत किया और महिला बुनकरों की स्थिति में सुधार के लिए कौशल प्रशिक्षण को बहुत जरूरी बताया गया ।

साहित्य की समीक्षा

नाथ दुलुमोनी (2020) ने कोविड–19 महामारी के दौरान महिला बुनकरों की स्थिति का अध्ययन किया और अपने शोध पत्र में लिखा कि हैंडलूम उद्योग भारतीय संस्कृति का हिस्सा है और यह हमारे देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह कृषि की क्षमता के बाद आर्थिक गतिविधियों में अधिक से अधिक लोगों को समाहित करता है । इस पत्र में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि हैंडलूम उद्योग महिलाओं की भागीदारी तय करने में उनकी गरीबी एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है क्योंकि महिलाओ द्वारा इस व्यवसाय में कम पूँजी निवेश कर घर पर ही रहकर कार्य किया जा सकता हैं इस प्रकार बुनाई क्रियाविधि में महिलाओं की हिस्सेदारी अधिक है फिर भी लॉकडाउन के कारण इस क्षेत्र में बुनकरों को बहुत हानि हुई और वे भारी कर्ज में डूबे हुए हैं, प्रमुख समस्याओं में कच्चे माल की कमी के कारण बुनकरों को आपूर्ति सही समय पर नहीं हो पा रही है इसीलिए उत्पाद का उत्पादन तथा बिक्री लॉकडाउन के दौरान बंद हो गई है लेकिन बुनकर विशेष रूप से महिला बुनकर है, तत्काल सरकार और गैर राज्य अभिनेताओं को राहत के कुछ रूप प्रदान करने के लिए हस्तक्षेप की आवश्यकता है । [1]

कुमार विवेक, कुमारी प्रतिष्ठा, यादव पूजा और कुमार मदन (2021) ने अपने पेपर में बताया है कि हैंडलूम उद्योग के अस्तित्व को पुरातात्विक निष्कर्ष और प्राचीन ग्रन्थ प्रकट करते है इसलिए इसे भारत के सबसे प्राचीन उद्योगों में से एक कहा गया है । तथा हैंडलूम उद्योग कृषि के बाद दूसरा सबसे बड़ा ऐसा क्षेत्र है जो बहुत से लोगो को रोजगार प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है, उपर्युक्त के बावजूद भी हैंडलूम उद्योग का विकेन्द्रीकृत होना, कच्चे माल की कीमत में तेजी से उतार–चढ़ाव, बुनाई के पारम्परिक तरीके, उत्पाद की उच्च कीमत होना, अपर्याप्त कुशल श्रमिक और युवाओ की कमी, कार्यशील पूँजी की समस्या, ऋण की कमी आदि समस्याएं इस क्षेत्र में विद्यमान होने से हाथकरघा उद्योग का विकास नहीं हो पा रहा है, इन समस्याओ के समाधान के लिए सरकार को समय–समय पर योजनाए बनाने और क्रियान्वित किये जाने की आवश्यकता हैं । [2]

सिंह हितैषी (2021) ने भारतीय हैंडलूम उद्योग के विश्लेषण कर अपने शोध पत्र में लिखा है कि भारतीय हैंडलूम उद्योग भारत में सबसे प्राचीन और सबसे बड़े कुटीर उद्योगों में से एक है यह उद्योग कृषि के बाद दूसरा सबसे बड़ा रोजगार प्रदाता क्षेत्र है तथा उद्योग को उनके अद्वितीय डिजाइन तथा बारीकी के लिए जाना जाता है । इस शोध पत्र के अंतर्गत इस क्षेत्र में समस्याए यह है कि बुनकरों को अधिक कार्य घंटे के बदले कम मजदूरी मिलती है जिससे बुनकर इस पेशे से बाहर निकलकर अन्य पेशे में जाना ज्यादा उचित समझते है, मुख्य समस्या इस क्षेत्र में बुनियादी ढांचो और माल की बिक्री का अभाव है, अतः सुझाव यह है कि बुनकरों को कार्य घंटो के अनुसार उचित मजदूरी दी जानी चाहिए तथा सरकार को बुनियादी ढांचो को सुधारने और बिक्री में वृद्धि करने के लिए उचित प्रबंध की जानी चाहिए । [3]

अध्ययन के उद्देश्य हैं

1. छत्तीसगढ़ राज्य के जांजगीर–चाम्पा जिले के हाथकरघा बुनाई उद्योग की महिला बुनकरों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का आकलन करें ।
2. जांजगीर–चाम्पा जिले की बुनाई उद्योग की अतीत और वर्तमान स्थिति की तुलना करना ।
3. छत्तीसगढ़ राज्य के हाथकरघा बुनाई उद्योग पर कोविड –19 का मूल रूप से प्रभाव ।

अध्ययन की पद्धति

उपर्युक्त अध्ययन में मुख्य रूप से द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है क्योकि यह पत्र द्वितीयक स्रोतों पर निर्भर करता है। प्राथमिक स्रोतों के पूरक माध्यमिक स्रोतों में भी विभिन्न पत्र–पत्रिकाएँ, लेख, समाचार पत्र आदि शामिल है । इन स्रोतों को भी इंटरनेट के माध्यम से एकत्र किया गया ।

महिला बुनकरों की स्थिति

हाथकरघा उद्योग में महिला बुनकरों की भागीदारी तय करने में आय महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है महिला बुनकर किसी नियोक्ता के अधीन नहीं हैं और वे अपने घरों में हाथकरघा उद्योग से सम्बंधित कार्य करती हैं और हाथकरघा उत्पाद की बिक्री से मजदूरी कमाती हैं । उनकी आय या कमाई में वृद्धि उत्पादों की बाजार मांग पर पूरी तरह से निर्भर करती है इस प्रकार बाजार की मांग में वृद्धि, बिक्री से होने वाली आय जितनी अधिक होती है बुनाई गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी उतनी ही अधिक होती है । पहले महिलाओं को सहकारी समिति के अधीन रहकर काम करने की आदत थी, लेकिन अब वे स्वतंत्र हो गई हैं और इस क्षेत्र में महिला बुनकरों को तुलनात्मक रूप से अधिक आय प्राप्त होती हैं ।

छत्तीसगढ़ राज्य के महिला बुनकरों पर कोविड–19 का प्रभाव

दुनिया भर में लॉकडाउन की घोषणा के बाद भारत के सबसे बड़े शिकार गिरते अर्थव्यवस्था अनौपचारिक क्षेत्र के श्रमिक वर्ग रहे हैं । भारत की लगभग 90 प्रतिशत अर्थव्यवस्था अनौपचारिक है, कृषि, पशुपालन में फैले लगभग 26 करोड़ अनौपचारिक श्रमिकों के साथ, निर्माण खनन, आतिथ्य और इतने पर प्रवासियों की दुर्दशा किसी से छिपी नहीं है। बुनकरों को भारी नुकसान हो रहा है और उन पर भारी कर्ज भी है, प्रमुख समस्याओं में से एक बुनकरों को कच्चे माल की कमी का सामना करना पड़ रहा है, वो बुनकर भी जो सहकारी समिति से जुड़े हुए हैं, यार्न जैसे आवश्यक कच्चे माल की कमी का सामना कर रहे हैं । इन सहकारी समिति के अंतर्गत काम करने वाले बुनकरों को कच्चा माल आपूर्ति करने में सामग्री आपूर्तिकर्ता परिवहन प्रतिबंधित है और उन्हें बुनकरों तक सूत पहुंचाने में बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है । यार्न एक आवश्यक वस्तु के रूप में बिक्री के लिए सूचीबद्ध नहीं है और इसलिए, इसका उत्पादन और बिक्री दोनों लॉकडाउन के दौरान बंद हो गए हैं, स्थिति बेहतर होने पर सूत की कीमत में वृद्धि की संभावना है । सहकारी समितियों से तैयार उत्पाद एकत्र करने में भी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है, लेकिन उनमें से कई ऐसे व्यक्ति भी हैं ।जिन्हे लगता है कि भले ही वे समान इकट्ठा करने में कामयाब हो जाएं, लेकिन वे उन्हें बेच नहीं पाएंगे, क्योकि बाजार बंद हैं और हाथकरघा उत्पादों की मांग दिन–प्रतिदिन गिरती जा रही है । यह केवल आर्थिक संकट ही नहीं, बल्कि सामाजिक–सांस्कृतिक आपदा भी है, इस प्रकार हाथकरघा क्षेत्र में आर्थिक संकट को सांस्कृतिक नुकसान के रूप में भी देखा जा सकता है । यह एक डर है जो कई बुनकरों और उनका समर्थन करने वाले संगठन के साथ प्रतिध्वनित होता है वे स्व–उपभोग और व्यावसायिक उद्देश्यों दोनों के लिए बुनाई, साथ ही कई महिलाएं अतिरिक्त पैसा कमाने के लिए बुनाई को एक गतिविधि के रूप में भी इस्तेमाल करती हैं, लेकिन वर्तमान में, इसमें कोई संदेह नहीं है कि सदियों पुराना छत्तीसगढ़िया हाथकरघा उद्योग गंभीर संकट में हैं, इसीलिए तत्काल राज्य सरकार को बुनकरों या महिला बुनकरों को विशेष प्रकार की राहत प्रदान करने के लिए हस्तक्षेप की आवश्यकता है । कोविड –19, इन बुनकरों के लिए अब केवल स्वास्थ्य संकट नहीं है बल्कि आजीविका के लिए भी खतरा है और सामाजिक–सांस्कृतिक आपदा है, क्योंकि उनमें से कई बुनकरों के लिए बुनाई, आजीविका का एक रूप है एक कला और उनकी संस्कृति और पहचान का एक हिस्सा, आज यह सब खतरे में है (चित्र क)।

निष्कर्ष

हम सभी जानते हैं कि राष्ट्रीय हाथकरघा दिवस भारत में हर साल 7 अगस्त को मनाया जाता है । इस वर्ष (2022) आठवां राष्ट्रीय हाथकरघा दिवस मनाया गया, हाथकरघा उद्योग भारत देश का प्राचीन पारंपरिक व्यवसायों में से एक है, लेकिन इस पेपर में मुख्यरूप से छत्तीसगढ़ राज्य में कोविड–19 के दौरान महिला बुनकरों की स्थिति का अध्ययन किया जाना है इसलिए हमें केवल छत्तीसगढ़ राज्य के महिला बुनकरों की स्थिति पर ध्यान केंद्रित किये जाने की आवश्यकता है, जैसा कि हमे ज्ञात है छत्तीसगढ़ राज्य की महिलाओं द्वारा किया जाने वाले हाथकरघा कार्य विश्व प्रसिद्ध है, यह महिलाओ के लिए गर्व की बात है, क्योकि महिलाएँ घर बैठे कार्य कर अपने परिवार के जीवन यापन में सहयोग प्रदान कर पाती है । कुछ साल पहले उत्पाद की बहुत अच्छी मांग थी, हाल ही में, कोविड –19 जैसी महामारी के आ जाने से हाथकरघा उद्योग में धीरे–धीरे गिरावट आती रही है क्योकि इस महामारी ने केवल हाथकरघा उद्योग को ही नहीं बल्कि अन्य उद्योग, व्यापार, धंधो को भी प्रभावित किया है, जिससे बुनकरों की आय बुरी तरह प्रभावित हुई है उपरोक्त अध्ययन से यह तथ्य सामने आता है कि छत्तीसगढ़ राज्य की महिला बुनकर आर्थिक दृष्टि से बहुत गरीब हैं, महिला बुनकरों को बुनाई से केवल विलय की आय हो रही है, परिवार के भरण–पोषण के लिए यह आय पर्याप्त नहीं है या परिवार की जरूरतों की पूर्ति नहीं हो पा रही है । नतीजतन, उन्होंने एक बेहतर अवसर की तलाश शुरू कर दी है, हाथकरघा उद्योग की निरंतर गिरावट ने महिला बुनकरों में स्वास्थ्य समस्याओं को बढ़ा दिया है क्योंकि उनका काम अधिक शारीरिक है, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं की स्थिति भी बहुत खराब है, सरकार के पूर्ण समर्थन और सहयोग से ही यह मजदूर वर्ग की महिलाएँ इस क्षेत्र में अपना भरण–पोषण कर पायेगी । इसलिए, बुनाई उद्योग में अधिक संख्या में कामकाजी महिलाओं के लिए नीतियां, कार्यक्रम और शिक्षा नीति समय–समय पर बनाये जाने और पारित किये जाने की आवश्यकता है ।

सन्दर्भ

[1] डॉ. नाथ, ''वीविंग वीमेन कंडीशन ड्यूरिंग कोविड–19 महामारी,'' यूनिवर्स इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च, अवस. 1, दव. 5, चच. 186–190, 2020.

[2] क. प. य. प. औ. क. म. कुमार विवेक, ''भारतीय हाथकरघा क्षेत्र की प्राचीन से समकालीन गाथा,'' इंडियन जर्नल ऑफ फाइबर एंड टेक्सटाइल रिसर्च, अवस. 46, चच. 411–431, 2021.

[3] स. हितेशी, ''हैंडलूम इंडस्ट्री ऑफ इंडिया,'' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस रिसर्च एंड इनोवेटिव आइडियाज इन एजुकेशन, अवस. 7, दव. 6, चच. 1326–1330, 2021.

चित्र (क) – कोविड–19 के दौरान महिला बुनकरों की स्थिति